नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

भारत की रक्षा तैयारियां

भारत की रक्षा नीति अब प्रतिक्रियात्मक नहीं रही, वह दूरदर्शी, आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर बनने की दिशा में अग्रसर है. हाल ही में रक्षा अधिग्रहण परिषद (डीएसी) द्वारा लगभग 79 हजार करोड़ रुपये के रक्षा सौदों को मंजूरी देना इस परिवर्तनशील सोच का स्पष्ट संकेत है. यह निर्णय न केवल सीमाओं की सुरक्षा को मजबूती प्रदान करेगा बल्कि 'मेक इन इंडिया' को रक्षा क्षेत्र में निर्णायक बल देगा. इन मंजूर परियोजनाओं में मिसाइल प्रणालियां, नौसेना की सतह तोपें, हाई-मोबिलिटी युद्ध वाहन और अत्याधुनिक संचार प्रणालियां शामिल हैं. इससे तीनों सेनाओं की तकनीकी और परिचालन क्षमता में वृद्धि होगी. यह कदम दर्शाता है कि भारत अब केवल सीमाओं की निगरानी करने वाला राष्ट्र नहीं, बल्कि बदलते सुरक्षा परिदृश्य के अनुरूप रणनीति गढ़ने वाला देश बन गया है. चीन और पाकिस्तान के साथ जारी सीमा तनाव ने यह स्पष्ट कर दिया है कि भविष्य का युद्ध केवल मानवबल नहीं, बल्कि तकनीकी श्रेष्ठता और त्वरित निर्णय क्षमता से जीता जाएगा.

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की यह घोषणा कि सभी खरीदों में 'मेक इन इंडिया' को प्राथमिकता दी जाएगी, भारतीय रक्षा उत्पादन के स्वदेशीकरण की दिशा में मील का पत्थर है. आज भारत ब्रह्मोस, पिनाका, नाग और तेजस जैसे प्रणालियों से लेकर युद्धपोत और हेलीकॉप्टर तक का उत्पादन घरेलू स्तर पर कर रहा है. डीआरडीओ के 100 से अधिक सफल प्रोजेक्ट 2025 तक इसी आत्मनिर्भर भारत की वास्तविक उपलब्धि हैं. यह स्थिति देश को आयातक से निर्यातक के रूप में उभरने की दिशा में अग्रसर करती है. रक्षा बजट की संरचना में भी यह आत्मविश्वास झलकता है. वर्ष 2025-26 के लिए 6.81 लाख करोड़ रुपये के रक्षा बजट में 1.72 लाख करोड़ रुपये पूंजीगत व्यय के तौर पर रखे गए हैं. इसका स्पष्ट अर्थ है कि सरकार केवल संचालन और पेंशन पर नहीं, बल्कि आधुनिक तकनीक, अनुसंधान और उत्पादन पर निवेश कर रही है. विशेष रूप से 75 प्रतिशत रक्षा खरीद का घरेलू स्रोतों से होना विदेशी निर्भरता को कम करने और रोजगार सृजन को बढ़ाने वाला प्रभावी कदम है.

भारत की तीनों सेनाओं की संयुक्त ताकत निस्संदेह प्रभावशाली है. 14.6 लाख सक्रिय सैनिक, हजारों टैंक और सैकड़ों विमान व नौसेना पोतों के साथ भारत विश्व की सबसे बड़ी सैन्य शक्तियों में शुमार है. लेकिन आधुनिक युग में केवल संख्या नहीं, बल्कि तकनीकी प्रगति ही निर्णायक होती है. ड्रोन, साइबर-युद्ध, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और अंतरिक्ष सुरक्षा प्रणाली जैसे क्षेत्रों में भारत का निवेश एक दूरगामी दृष्टिकोण का प्रतीक है. यह दिखाता है कि देश अब 21वीं सदी के तकनीकी युद्धक्षेत्र के लिए स्वयं को तैयार कर रहा है. रक्षा अधिग्रहण परिषद की हालिया मंजूरी केवल सैन्य सौदों का संकलन नहीं, बल्कि भारत की सामरिक स्वायत्तता की नई परिभाषा है.

इससे यह भी स्पष्ट है कि भारत अब सीमित संघर्ष की नहीं, बल्कि व्यापक सुरक्षा और शक्ति संतुलन की रणनीति को अपना रहा है, चाहे वह समुद्र हो, आकाश हो, या डिजिटल स्पेस.कुल मिलाकर भारत की रक्षा तैयारियां अब केवल खतरे का उत्तर देने के लिए नहीं, बल्कि भविष्य की संभावनाओं को आकार देने के लिए हैं. आत्मनिर्भर, सक्षम और संसाधन-संपन्न भारत अब सुरक्षा का उपभोक्ता नहीं, बल्कि निर्माता और संरक्षक दोनों है. यही रूपांतरण उस आत्मविश्वास का प्रतीक है जो भारत को न केवल सीमाओं की रक्षा करने वाला राष्ट्र, बल्कि वैश्विक स्थिरता का स्तंभ बनने की राह पर अग्रसर करता है.

जीएसटी सुधार और पर्यटन का नया सवेरा

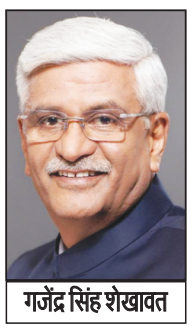
गजेंद्र सिंह शेखावत

> जिस प्रकार भारत अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी की ओर अग्रसर है, विकसित भारत का सपना वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी और सांस्कृतिक रूप से सशक्त पर्यटन इको-सिस्टम के बिना अधूरा रहेगा. दुनिया भारत को नए सिरे से जान रही है- न केवल एक गंतव्य के रूप में, बल्कि एक ऐसे अनुभव के रूप में जो परंपरा का आधुनिकता के साथ, अर्थव्यवस्था का संवेदना के साथ सामंजस्य बिठाता है. युक्तिसंगत जीएसटी, बेहतर कनेक्टिविटी, सशक्त कारीगरों और आत्मविश्वास से भरे उद्योग के साथ, भारत की पर्यटन गाथा इस दशक की सफलतम कहानियों में से एक बनने जा रही है - एक ऐसी कहानी जहां सुधारों का मेल पुनर्जागरण से होता है और हर यात्रा नए भारत के निर्माण में योगदान देती है.

भारत में पर्यटन का अर्थ हमेशा ही मनोरंजन से कहीं बढ़ कर रहा है - यह सभ्यताओं के बीच संवाद, विरासत का वाहक और समावेशी विकास का उत्प्रेरक है. फिर भी, दशकों से, लद्दाख के मठों से लेकर कन्याकुमारी के समुद्री तटों तक, हमारी अद्वितीय विविधता के बावजूद, इसकी पूरी क्षमता का दोहन करों के अलग-अलग ढांचे और उच्च लागत के कारण नहीं हो पाया है. वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) में हाल के सुधारों ने इस कहानी को अब बदलना शुरू कर दिया है.

वर्षों से, भारत का पर्यटन और आतिथ्य उद्योग एक जटिल कर व्यवस्था के बोझ तले दबा रहा है. सेवा कर, वैट, विलासिता कर जैसे कई तरह के करों ने भ्रम उत्पन्न किया और यात्रा की लागत बढ़ा दी. जीएसटी लागू होने से करों में सरलीकरण तो हुआ था, लेकिन हाल ही में दरों का युक्तिसंगत बनाया जाना भारतीय पर्यटन को और अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने में निर्णायक सिद्ध हुआ है. होटल के 7,500 रुपये से कम शुल्क वाले कमरों पर जीएसटी की दर 12% से घटाकर 5% करना विशेष रूप से परिवर्तनकारी रहा है. मध्यम वर्गीय परिवार और कम खर्च में यात्रा करने वाले लोग, जो घरेलू पर्यटन की रीढ़ हैं, उनके लिए यात्रा अब अधिक किफायती हो गई है. उच्च अधिभोग दर, लंबे समय तक प्रवास और स्थानीय स्तर पर अधिक खर्च इसके प्रत्यक्ष परिणाम हैं. कम अनुपालन लागत से छोटे उद्यमियों और होमस्टे मालिकों के लिए लाभप्रदता में सुधार हुआ है और औपचारिकता को बढ़ावा मिला है. यह पर्यटन के विस्तार और स्थायित्व की दिशा में शांत लेकिन महत्वपूर्ण बदलाव है.

पर्यटन कनेक्टिविटी के बल पर फलता-फूलता है. यात्री परिवहन पर, खासकर दस से ज़्यादा यात्रियों वाली बसों पर जीएसटी दर का 28% से घटाकर 18% किया जाना एक महत्वपूर्ण कदम है. इससे तीर्थयात्रियों, छात्रों और परिवारों के लिए अंतर-शहरी और समूह यात्राएँ ज़्यादा सुलभ हो गई हैं. हेरिटेज सर्किट, इको-टूरिज्म पार्क और ग्रामीण पर्यटन स्थलों में नई ऊर्जा देखने को मिल रही है. यह सुधार सस्ते टिकटों की उपलब्धता से कहीं बढ़कर है-यह क्षेत्रों को जोड़ने, यात्रा को सबके लिए सुलभ बनाने और छोटे टूर ऑपरेटरों को अपना कारोबार बढ़ाने का अवसर देने से संबंधित है. भारत के लिए, जहाँ पर्यटन क्षेत्रीय समानता का एक सशक्त माध्यम है, वहीं किफायती यात्रा आर्थिक सशक्तिकरण का आधार है.

भारत का आकर्षण केवल उसके स्मारकों में ही नहीं, बल्कि उसकी जीवंत परंपराओं में भी निहित है. कला और हस्तशिल्प उत्पादों पर जीएसटी को 12% से घटाकर 5% करने से उस क्षेत्र को बढ़ावा मिला है जो लाखों कारीगरों के जीवनयापन का आधार है. स्थानीय बाज़ार में बिकने वाली हर हस्तनिर्मित कलाकृतियों पर भारत की सांस्कृतिक निरंतरता की छाप होती है. करों में कमी किया जाना यहाँ महज़ आर्थिक पहल भर नहीं है- यह एक सांस्कृतिक निवेश है. आज पर्यटक प्रामाणिकता की तलाश में रहते हैं और जब वे हाथ से बुनी कांचीपुरम की साड़ी या चंदन की नक्काशीदार मूर्ति घर ले जाते हैं, तो वे भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था का एक हिस्सा अपने साथ ले जाते हैं. यह सुधार कारीगरों को सशक्त बनाता है, शिल्प समूहों को मज़बूत बनाता है और विरासत को विकास की कहानी का हिस्सा बनाता है.

संभवत: जीएसटी का सबसे स्थायी लाभ स्पष्टता है. छोटे होटल, होमस्टे और ट्रैवल एजेंसियाँ अब राज्य-विशिष्ट करों की भूलभुलैया के बजाय एक ही निर्धारित ढाँचे के भीतर काम करती हैं. इससे अनुपालन में सुधार होता है, निवेशकों का विश्वास बढ़ता है और नवाचार के लिए जगह बनती है.

औपचारिकीकरण उन हज़ारों छोटे ऑपरेटरों के लिए ऋण, बीमा और डिजिटल भुगतान तक पहुँच भी बनाता है, जो कभी अनौपचारिक रूप से काम किया करते थे. एक ऐसा क्षेत्र, जो अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक महिलाओं और युवाओं को रोजगार देता है, यह एकीकरण परिवर्तनकारी है. पर्यटन अब केवल फुर्सत के क्षणों में आनंद उठाने से संबंधित उद्योग मात्र ही नहीं रह गया है, बल्कि उद्यमिता और आजीविका का प्रेरक भी बन चुका है.

(लेखक केंद्रीय संस्कृति और पर्यटन मंत्री हैं.)

वैश्विक भुगतान के लिए डिजिटल करेंसी

भारत शीघ्र ही अपनी डिजिटल करेंसी जारी करेगा जिसे भारतीय रिजर्व बैंक का सहयोग व समर्थन होगा. इसे सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी (सीबीडीसी) का नाम दिया जाएगा. इसके इस्तेमाल से वित्तीय सौदे तेज, सुरक्षित व अधिक पारदर्शी हो सकेंगे तथा अर्थव्यवस्था में पत्रमुद्रा या करेंसी नोटों का इस्तेमाल घटेगा. जहां तक खुदरा भुगतान या लेन-देन की बात है, लोग यूपीआई का इस्तेमाल करते हैं लेकिन बैंकों के आपसी व्यवहार, बड़े सौदों तथा अंतरराष्ट्रीय व्यापार में सीबीडीसी उपयोगी है. वैश्विक जीडीपी में 98 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करने वाले 130 देश सीबीडीसी की उपयोगिता को परख रहे हैं. पीपुल्स बैंक ऑफ चाइना सीबीडीसी पायलट प्रोजेक्ट के क्षेत्र में अग्रिम मोर्चे पर है. नाइजीरिया, बहामाज व जमैका जैसे छोटे देशों ने अधिकृत तौर पर डिजिटल करेंसी जारी की है. भारत के लिए डॉलर आधारित स्विफ्ट की बजाय सीमा पार के देशों को सीबीडीसी में भुगतान करने का विकल्प रहेगा. यूक्रेन पर हमले के बाद रूस पर जो प्रतिबंध लगाए गए थे उनमें उसे स्विफ्ट के इस्तेमाल से बाहर कर दिया गया था. इस समय बैंक ऑफ इंटरनेशनल सेटलमेंट को नजरअंदाज कर चीन, थाईलैंड, हांगकांग, सऊदी अरब व यूएई क्रॉसबार्डर पेमेंट के लिए सीबीडीसी के इस्तेमाल का परीक्षण कर रहे हैं. भारतीय रिजर्व बैंक ने 2022 के अंत में सीबीडीसी की पायलट टेस्टिंग की थी लेकिन ई-रुपी तथा यूपीआई आधारित भुगतान की वजह से सीबीडीसी को उतना प्रोत्साहन नहीं मिल पाया. मार्च 2025 के अंत तक खुदरा क्षेत्र में ई-रुपी का लेन-देन 1,106 करोड़ रुपये था. रिजर्व बैंक के डिप्टी गवर्नर के अनुसार यूपीआई के 70 लाख उपयोगकर्ता थे. उस अवधि तक थोक सौदे में ई-रुपी का कोई इस्तेमाल नहीं हुआ था.

ई-रुपी में सीमा पार भुगतान तभी संभव हो पाएगा जब अन्य देश इसके इच्छुक हों. यदि डॉलर का इस्तेमाल घटाना है तो भारत को ऐसे देशों को राजी करना होगा कि वह सीबीडीसी के जरिए डिजिटल भुगतान को अपनाएं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

मध्य क्षेत्र की डायरी

आखिर जिम्मेदारी से कब तक भागता रहेगा प्रशासन

दिलीप झा

विदिशा और भोपाल में कार्बाइड गन से 200 से अधिक लोगों की आंखों की रोशनी खराब हो गई। यह हैरानी की बात है कि पूरे प्रदेश में 292 लोगों की आंखों में जलन और चोट के केस सामने आने के बाद सरकार और प्रशासन की नींद खुली है।

गुरुवार देर रात प्रशासन ने कार्बाइड गन बनाने, बेचने और खरीदने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया है लेकिन सबसे अहम सवाल यह है कि आखिर प्रशासन अपनी जिम्मेदारी लेने से कब तक भागता रहेगा। पिछले 10 दिनों से कार्बाइड गन की खुलेआम बिक्री हो रही थी लेकिन प्रशासन को इसकी भनक तक नहीं थी, लोगों को यह अचंभित करने वाली बात लगती है। जेपी, हमीदिया, एम्स और बीएमएचआरसी में अबतक 100 से ज्यादा लोग उपचाराधीन हैं और इनमें 62 की हालत गंभीर बताए जा रहे हैं। कार्बाइड गन का सबसे ज्यादा शिकार मासूम बच्चे हुए जिनकी आंखों की रोशनी खराब हो गई है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और चीफ सेक्रेटरी अनुराग जैन ने आदेश दिए थे कि दिवाली पर बाजार में सस्ती और कैल्शियम कार्बाइड वाली गन बिकने न दें। लेकिन इसके बावजूद हर जिले में इसकी खुलेआम बिक्री होती रही तो इससे जाहिर होता है कि जिले के कलेक्टरों ने आदेश को गंभीरता से नहीं लिया। जबकि धारा 163 के अनुसार कलेक्टर अथवा उप कलेक्टर के पास यह अधिकार है कि संभावित किसी खतरे से निपटने के लिए वे विशेष आदेश जारी कर सकते हैं लेकिन उन्होंने गंभीरता नहीं दिखाई। दरअसल हमारे सिस्टम में सांप भागने के बाद लकीर पीटने की आदत से अधिकारी ग्रसित हैं और जब हाय-तौबा मचाई जाती है तब जाकर उनकी नींद खुलती हैं। जाहिर है इससे उनकी कार्यशैली पर सवाल तो उठेंगे ही ?। पुलिस ने अबतक 100 से ज्यादा कार्बाइड गन जप्त किए हैं ?। पुलिस कमिश्नर हरिनारायणाचारी मिश्र के निर्देश पर राजधानी के सभी थानों की पुलिस ने आई सेफ्टी आपरेशन के तहत कार्रवाई में जुटी है कि दिवाली पर पीवीसी पाइप और लाइटर के हिस्से से बनी सस्ती और नकली गन बाजार में कैसे भर गई। लेकिन अभी भी प्रदेश के अन्य प्रभावित जिलों से पुख्ता कार्रवाई की रिपोर्ट नहीं सौंपी गई है। इसके पीछे कौन लोग हैं और वे ऐसा क्यों कर रहे थे, सरकार को इसकी गहन जांच करवानी चाहिए। मासूम बच्चे की जिंदगी से खिलवाड़ करने वालों को बख्शा नहीं जाना चाहिए।

सूत्र बताते हैं कि सरकार की छवि को बदनाम करने का बड़ा षडयंत्र चल रहा है और इसलिए समय समय पर इस तरह के कारनामे सामने आ रहे हैं। प्रदेश के 11 जिले में नकली कार्बाइड गन धड़ल्ले से बिक गई और हमारा सिस्टम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहा। भोपाल के बाद विदिशा दूसरा सबसे प्रभावित जिला है जहां 50 से ज्यादा मामले सामने आए हैं। वहीं, सीहोर तीसरा जिला है जहां 28 लोगों के आंखों

की रोशनी खराब हुई है। ग्वालियर में 19 केस सामने आने की खबर है। इस बीच गुरुवार को उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल का बयान आया है कि जिन जिलों में बच्चों एवं अन्य लोगों की आंखों को नुक़सान हुआ है, वहां छापेमारी की गई है।

उन्होंने शुक्रवार को हमीदिया अस्पताल में उपचाराधीन बच्चों का हालचाल जानने के बाद मीडिया से कहा कि हादसे की जांच जारी है। वहीं, मध्यप्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष के नेता उमंग सिंघार ने भी हमीदिया अस्पताल में कार्बाइड गन के कारण घायल बच्चों से मिलकर उनके स्वास्थ्य की जानकारी ली।

खतरे को भांपने में प्रशासन रहा विफल

यह भी आश्चर्यजनक है कि पटाखों की आड़ में आंखों को जलाने वाली कैल्शियम कार्बाइड गन दिवाली से 10 दिन पहले से ही बेचे जा रहे थे लेकिन हमारे अधिकारी चैन की नींद सो रहे थे। आखिर त्योहार के अवसर पर इतने घातक सामान बाजार में बेचने की अनुमति किसने दी। इसके लिए कौन जिम्मेदार है, यह सरकार को सुनिश्चित करना चाहिए, नहीं तो ऐसे ही लोगों की सेहत खिलवाड़ जारी रहेगा और हमारा सिस्टम अपनी खामियां छिपाता रहेगा।

निशानेबाज

कांग्रेस का मौसम हुआ गुलाबी राहुल गांधी ने तली जलेबी

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी के जीवन की दिशा हमें समझ में नहीं आ रही है. वह दिल्ली की 237 वर्ष पुरानी मिठाई की दुकान घंटेवालाजाकर इमरती तलने लगे और लड्डू बनाने लगे. उन्हें नेतागिरी करनी है या हलवाई की दुकान खोलनी है?

हमने कहा, राजनीति में आश्वासनों की गोल-गोल इमरती या जलेबी से जनता को लुभाया जाता है. मन के लड्डू फोड़े जाते हैं. टिकट की मांग करने वालों को आ वे लड्डू, जा वे लड्डू कहकर यहां से वहीं घुमाया जाता है.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, घंटेवाला के मालिक ने राहुल को बताया कि पं. जवाहरलाल नेहरू से लेकर राजीव गांधी तक इसी दुकान के ग्राहक थे. राजीव और सोनिया की शादी में मिठाई इसी दुकान से गई थी. उसने राहुल से यह भी कहा कि अब हम आपकी शादी का इंतजार कर रहे हैं. उसके लिए मिठाई हमारे

यहां से ही मंगवाना.

हमने कहा, खानदानी ताल्लुकात इसी तरह जुड़ते हैं. शायद शादी के मामले में राहुल मिठाई वाले की सलाह सुन लें. घंटेवाला ने तो घंटा बजा दिया, अब शहनाई बजवाने के लिए राहुल को तैयारी दिखानी होगी.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, कोई भी खूबसूरत लेकिन आरामतलब लड़की राहुल को पसंद कर लेगी क्योंकि अपने कुकिंग के शौक और रेसिपी तैयार करने की रुचि की वजह से वह किचन संभाल लेंगे. यदि लड़की विदेशी हुई तो आश्चर्य में पड़ जाएगी कि जलेबी के भीतर रस कैसे आया? क्या उसे इंजेक्शन के जरिए भरा गया?

हमने कहा, प्रधानमंत्री मोदी ने लोगों को बेरोजगारी दूर करने के लिए पकौड़े तलने की सलाह दी थी. उनके मिर्च के तीखे पकोड़े की बजाय राहुल की जलेबी या इमरती लोगों का मुंह मीठा करेगी. कांग्रेस पार्टी भी चाहे तो बिहार के इलेक्शन में एनडीए की रेवड़ी का मुकाबला करने के लिए हर चुनाव क्षेत्र में राहुल ब्रांड वाली गरमा गरम जलेबी बांटे. जिस तरह गुड़ से चींटे चिपक जाते हैं, वैसे ही जलेबी से वोटर चिपक जाएंगे.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12060 - डॉ. सागर खादीवाला

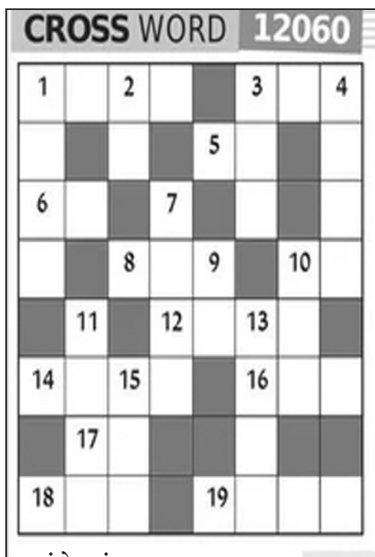

ऊपर से नीचे
1 जुल्म, अन्याय, दुराचार, अनुचित आचरण (सं.) 2. वह दैनिक या मासिक व्यय जो कर्मचारी को यात्रा - अतिरिक्त कार्य या महंगाई के रूप में दिया जाता है 3. रथ चलाने वाला 4. पद्म, कमल (सं.) 7. धरोहर, थाती (उर्दू) 9. जल, पानी 10. गायों का समूह या झुंड, गाय रूपी संपत्ति 11. मदद 13. कालीदास की महान रचना 15.

बाएं से दाएं
1. तजुर्बा, काम की जानकारी, प्रयोग द्वारा प्राप्त ज्ञान (सं.) 3. सार, संक्षेप, तात्पर्य 5. स्वर, ध्वनि, देवता, सूर्य 6. चेला, शिष्य, 8. सारंगी बजाने का गज, लोहे आदि की लचीली तीली 10. वृत्त या चक्र की तरह का, झुंड 12. प्राचीनकाल में एक प्रकार का यज्ञ 14. गवाही, सबूत, धर्मयुद्ध में लड़ते हुए मारा जाना (उर्दू) 16. ठोसपन, घनापन 17. मृत्यु के देवता 18. विस्तार, फैलाव, बड़ा तंबू या खेमा (सं.) 19. रविवार

Solution 12059

ना	ग	पु	र		का		बे
श	तें			चा	र	पा	ई
वा		प्र	सा	र	ण		मा
न	वी	क	र	ण		भा	न
	त	र				पा	
पु	रा	ण		अ	सु	वि	धा
ज	ग		दा	ल		ज्ञा	न
ना		आ	वा	ग	म	न	

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में नवीन कार्यों में रूचि एवं सफलता प्राप्त होगी, व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा, वर्ष के मध्य में सत्ता सुख प्राप्त होगा,स्थाई लाभ का योग है, वर्ष के अन्त में माता पिता के कमजोर स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, अत्याधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी, अधिकारी वर्ग से मतभेद हो सकता है.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को माता पिता के कमजोर स्वास्थ्य से मन अशांत रहेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को अत्याधिक परिश्रम से सफलता मिलेगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को स्थाई लाभ का मार्ग प्रशस्त होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को सत्ता पक्ष से सुख मिलेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अधिकारों में वृद्धि होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को मतभेद हो सकता हे, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक करना होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिये बालक का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, मान प्रतिष्ठा अच्छी होगी, शिक्षा उत्तम रहेगी, नौकरी में इनको अच्छी सफलता मिलेगी, परोपकारी कार्यो में अच्छी रूचि रहेगी, पिता का भक्त होगा, व्यापार में रूचि रहेगी.

मेष- आप अपनी गलती मानने की बजाय दूसरों को दोष देंगे, जिससे संबंध बिगड़ सकते हैं, व्यर्थ की चिन्ता तथा मानसिक तनाव रहेगा, सावधानी रखकर कार्य करें.

वृषभ- भवावेश में नुकसान हो सकता है, धैर्य और शांति से कार्य करें, यात्रा हो सकती है, आय से अधिक धन व्यय होगा, कामकाज में शिथिलता रहेगी.

मिथुन- भावनाओं पर काबू रखें, लोग मजाक उड़ायेंगे, पारिवारिक मामलों में सबकी बात सुनें, नवीन योजनाओं का विस्तार होगा,आशातीत सफलता के योग हैं.

कर्क- जीवनसाथी के व्यवहार से खिन्नता होगी, सूझबूझ का लाभ होगा, नौकरी एवं राजनैतिक कार्योमें सफलता मिलेगी, मांगलिक कार्य बनेंगे.

सिंह- कार्य को समय पर पूरा कर लें, लाभ होगा, मामूली बात से करीबी रिश्ते में गलतफ्हमी हो सकती है, आपके मनोबल से कार्य बनने का योग है.

कन्या- विरोधियों से निपटने के लिये कूटनीति से काम लें, प्रियजन से मुलाकात होगी, उत्सव समारोह में सम्मिलित होने के अवसर मिलेंगे.

तुला- मेहमानों की आवाजाही रहने से व्यस्त रहेंगे, पूर्व में की गई मेहनत का लाभ मिलेगा, पारिवारिक सुख एवं आनन्द बना रहेगा.

वृश्चिक- अधिकारियों की अनदेखी से मुश्किल हो सकती है, अटका धन वसूल कर लेंगे, शत्रु वर्ग पराजित होगा, प्रियजनों के कारण भावनात्मक पीड़ा होगी.

धनु- भाग्यवृद्धि के अवसर मिलेंगे, सहकर्मियों के असहयोग से तनाव बढ़ सकता है, प्रेम संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी, शिक्षा आदि से संबंधित कार्य अधूरे रहेंगे.

मकर- मित्रों के साथ घूमने का कार्यक्रम बनेगा, बुजुर्गों के स्वास्थ्य का ध्यान रखें, प्रिय मित्र से भेंट होगी, कोर्ट कचहरी के कार्यों में सफलता मिलेगी.

कुम्भ- सकारात्मक सोच से उलझे मामले सुलझेंगे, मांगलिक कार्य में आपकी उपस्थिति सुखद रहेगी, आलस्य को त्यागें, निजी कार्य बनने से प्रसन्नता होगी.

मीन- कोर्ट कचहरी के मामले पक्ष में हल होंगे, धैर्य से काम लें, खर्च की अधिकता रहेगी, आर्थिक संकट का सामना करना पड़ सकता है.

उदयकालीन ग्रह चाल

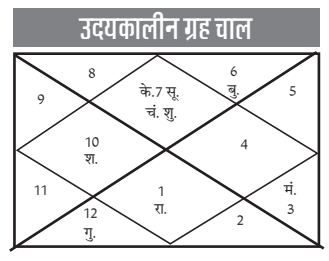

पंचांग

रा.मि. 03 संवत् 2082 कार्तिक शुक्ल चतुर्थी शनिवासरे रात 12/31, ज्येष्ठा नक्षत्रे दिन-रात, शोभन योगे रातअंत 5/54, वणिज करणे सू.उ. 6/23, सू.अ. 5/37, चन्द्रचार वृश्चिक, पर्व- श्रीवैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, शु.रा. 8, 10, 11, 2, 3, 6 अ.रा. 9, 12, 1, 4, 5, 7 शुभांक-0, 3, 7.

व्यापार भविष्य

कार्तिक शुक्ल चतुर्थी को ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रभाव से रूई, कपास, के भाव में उठाव आयेगा, सोना, चांदी, में मंदी की चाल रहेगी, गुड़, खांड़, कपास के भाव में समता रहेगी, हाजिर मार्केट में आज के भाव महत्वपूर्ण रहेंगे, भाग्यांक 2818 है.

SUDOKU 7192

2	9			5				4
4			2		7		8	
	1	6		8				3
8		5		9				7
3	6			2			1	9
1				3		5		2
5				7		6	3	
	3		1		8			5
9				6			2	1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7191

7	8	1	6	9	4	2	5	3
2	6	4	5	3	6	1	7	9
5	3	9	1	2	7	4	6	8
9	5	8	7	4	1	3	2	6
1	2	3	9	5	6	7	8	4
4	7	6	3	8	2	9	1	5
3	9	7	2	6	5	8	4	1
6	4	2	8	1	9	5	3	7
8	1	5	4	7	3	6	9	2